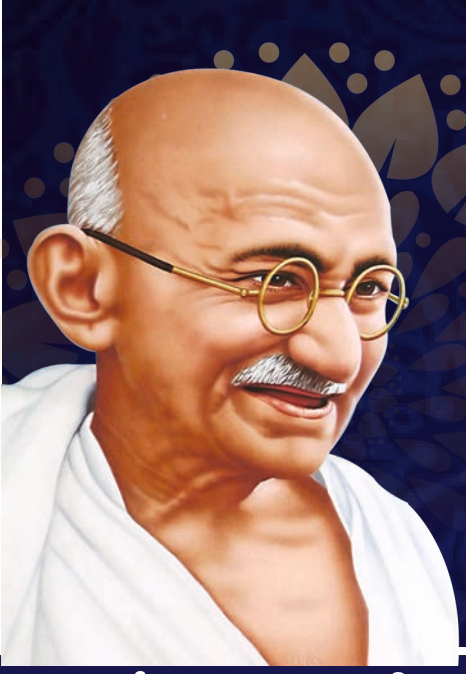

"भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम वर्तमान में क्या करते हैं"
महात्मा गांधी

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद (एमजीएनसीआरई)

सुखद 2020

कनेक्ट

वर्ष - 6 अंक - 1 जनवरी 2020

www.mgncre.org

ग्रामीण प्रबंधन में अग्रणी ! फिर से एमजीएनसीआरई आगे !
ग्रामीण वित्तीय समावेशन के साथ... ग्रामीण आर्थिक विकास के माध्यम से ग्रामीण विकास हासिल किया जाएगा।

'' स्वच्छ वातावरण से शुद्ध मन बनेगा और समाज के बड़े लाभ के लिए हमारे छात्रों और शिक्षकों के विचारों को बुलंद किया जा सकेगा" केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने कहा । उन्होंने नई दिल्ली में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से तीसरे स्वच्छता रैंकिंग पुरस्कार समारोह को संबोधित किया। जहां 48 विश्वविद्यालयों और संस्थानों को विभिन्न श्रेणियों में सम्मानित किया गया। उन्होंने स्वच्छ और हरित कॉलेज परिसरों को विकसित करने के लिए मंत्रालय के प्रयास की सराहना की, जो छात्रों के लिए स्वस्थ अध्ययन वातावरण का निर्माण करेगा, जिससे उनके दिमाग उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित होंगे।

एमजीएनसीआरई के लिए यह गर्व का क्षण था जब श्री रमेश पोखरियाल ने मंत्रालय के करियर और पेशों को स्वछता से जोड़ने की बात कही। एमजीएनसीआरई अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण स्वच्छता, स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन, प्रबंधन में एमबीए और सामाजिक उद्यमिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा और अब ग्रामीण प्रबंधन में बीबीए और एमबीए के लिए पाठ्यक्रम बनाकर इस पहल का हिस्सा रहा है। स्वच्छ कैंपस, जल शक्ति कैंपस और जल शक्ति ग्राम मैनुअल के लिए मानक संचालन मैनुअल भी पहले विकसित किए गए थे।

देश में कई संस्थानों में पेश किए जाने वाले पाठ्यक्रमों का ये समूह क्षेत्र अध्ययन उन्मुख, इंटर्नशिप उन्मुख है और संपूर्ण पाठ्यक्रम उद्योग संचालित है।

श्री वीएलवीएसएस सुब्बा राव ने कहा कि "स्वच्छता का अभ्यास बहुत ही स्फूर्तिदायक है। स्वच्छता से दिल साफ होता है और मन साफ होता है। सफाई के इस तत्व की बहुत आवश्यकता है क्योंकि हम विश्व शांति की ओर बढ़ते हैं"

अध्यक्ष एमजीएनसीआरई ने कहा कि " हमें वित्तीय समावेशन के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने की जरूरत है और सिर्फ ग्रामीण समुदाय को एक उपभोक्ता के रूप में और वित्तीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में एक निर्माता और उत्पादक एजेंट के रूप में। ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम विश्व अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकते हैं। विश्व अर्थव्यवस्था पोषण संबंधी समृद्ध अर्थव्यवस्था की ओर देख रही है। ग्रामीण वित्तीय समावेशन के साथ ग्रामीण विकास ग्रामीण आर्थिक विकास के माध्यम से होना चाहिए। शिक्षा ग्रामीण भारत में लचीलापन बनाने का एकमात्र तरीका है। ग्रामीण प्रबंधन पर हमारा पाठ्यक्रम सामग्री ग्रामीण भारत को सक्रिय और विकसित करने के इस मोड़ पर लाने के लिए उपयुक्त है। "

एक राष्ट्र को अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, उसे एक पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है जो उसकी आवश्यकताओं के लिए कार्यात्मक और प्रासंगिक हो। भारत की चिंताओं में एमजीएनसीआरई का योगदान महत्वपूर्ण रहा है, और अब एक और मील का पत्थर है स्नातक और मास्टर डिग्री के लिए ग्रामीण प्रबंधन पर पाठ्यक्रम

सचिव उच्चतर शिक्षा श्री आर सुब्रह्मण्यम, यूजीसी के अध्यक्ष प्रो डीपी सिंह, एआईसीटीई के अध्यक्ष प्रोफेसर अनिल डी सहस्रबुद्धे, वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार श्री वीएलवीएसएस सुब्बा राव और संयुक्त सचिव एमएचआरडी सुश्री नीता प्रसाद की उपस्थिति में 3 दिसंबर को नई दिल्ली में पाठ्यक्रम जारी किया गया। कुलपति, निदेशक और देश भर के प्रतिष्ठित शिक्षाविद इस अवसर पर मौजूद थे। डॉ. अभय जेरे, ग्रामीण अर्थव्यवस्था नवाचार अधिकारी (सीआईओ) और वित्तीय समावेशन के वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर मौजूद थे।

यह कई संस्थानों के साथ हमारे 2 साल के प्रयास का परिणाम है। आईआरएमए, एक्सआईएमबी, केएसआरएम, कल्याणी विश्वविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय, गोवा विश्वविद्यालय, मिजोरम विश्वविद्यालय, विश्वभारती विश्वविद्यालय, बैंगलोर विश्वविद्यालय, कुमाऊं विश्वविद्यालय और सतवाहन विश्वविद्यालय सहिएमजीएनत सीआरई द्वारा प्रायोजित किया गया।

श्री कृष्णा कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर ने एमजीएनसीआरई द्वारा विकसित अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता पर दो क्रेडिट पाठ्यक्रम शुरू किया।

संपादक की टिप्पणी

चुनौतियों को पार करें और उन बदलावों को लाएं जिन्हें आप देखना चाहते हैं!

एमजीएनसीआरई असाधारण ताकत और प्रतिबद्धता के साथ एक संगठन के रूप में प्रभावशाली है। हमारी टीम हमारे प्रयासों और दावों के लिए प्रशंसापत्र है। हमारे उच्च अनुभवी और कुशल संकाय हमारी सबसे बड़ी ताकत हैं। हमने इस वर्ष में अब तक कुछ सफलता हासिल की हैं और हमने आगामी वर्ष के लिए नए गंतव्य और लक्ष्य निर्धारित किए हैं। हमने इस संस्थान के लिए एक महान भविष्य की परिकल्पना की है जो केवल योगदान, उत्साह, प्रतिबद्धता, समर्पण के साथ संभव होगा जो इन सभी वर्षों में हमारे साथ रहा है। मैं बहुत सकारात्मक और आशान्वित हूँ कि हम अपने भविष्य के सभी प्रयासों में प्रबल रहेंगे। नए साल में सभी आशाओं और वादों के साथ, यह नया साल लाएगा, यह हमें एक साथ काम करने के लिए बहुत अधिक अवसर भी प्रदान करता है। वर्ष के दौरान हमने भविष्य के लिए एमजीएनसीआरई को स्थान देने के लिए कई महत्वपूर्ण मील के पत्थर की उपलब्धि में हमारी कड़ी मेहनत का परिणाम देखा।

प्राध्यापक विकास कार्यक्रम, कार्यशालाएँ, राउंडटेबल्स, ग्रामीण मग्नता प्रशिक्षण कार्यक्रम, उद्योग-अकादमिया सह प्रदर्शनियों, पाठ्यक्रम और पुस्तक विमोचन, यूनिसेफ के सहयोग से डब्ल्यूएएस स्वयंसेवी कार्यक्रम, गाँव के दौरे, यूबीए गतिविधियों, इंटर्नशिप अध्ययन और एक मेजबान सहित स्वच्छ कार्य योजना की गतिविधियाँ सहयोगी प्रयासों ने वर्ष को चिह्नित किया। अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एमबीए पर पाठ्यचर्या और ग्रामीण प्रबंधन में बीबीए और एमबीए प्रमुख शैक्षणिक उपलब्धियां थीं। जल शक्ति परिसर और जल शक्ति ग्राम नियमावली 2 अक्टूबर को देशभर में जारी की गई थी और इसका उच्च शिक्षा संस्थानों पर काफी प्रभाव पड़ा था। एफडीपी और कार्यशालाओं और गोलमेज के अपने पिछले एजेंडे को जारी रखते हुए, हम सभी राज्यों में धीरे-धीरे और लगातार नई तालीम और सामुदायिक व्यस्तता पैदा कर रहे हैं। एमएचआरडी ने एमजीएनसीआरई को ग्रामीण प्रबंधन शिक्षा में इसके योगदान और स्वच्छता से संबंधित पाठ्यक्रम और नियमावली शुरू करने सहित विविध और अनूठी उपलब्धियों के लिए बधाई दी है। बड़ी दृष्टि उच्च शैक्षणिक संस्थानों (एचईआई) को अध्ययन के एक क्षेत्र के रूप में ग्रामीण
सामुदायिक अनुबंध को पहचानने, बढ़ावा देने और संस्थागत बनाने में सक्षम बनाना है। एमजीएनसीआरई का मुख्य लक्ष्य भारत के 650000 गाँवों तक पहुँचना है। मैं अपनी पहल में हमें प्रोत्साहित करने और समर्थन करने के लिए मंत्रालय को धन्यवाद देता हूँ। मैं श्री वीएलवीएसएस सुब्बा राव वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार एमएचआरडी को हमारे स्वच्छ कार्यक्रमों और शैक्षणिक प्रबंधन में एमबीए और ग्रामीण प्रबंधन में बीबीए और एमबीए सहित शैक्षणिक हस्तक्षेप के लिए उनके निरंतर समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूँ। पाठ्यक्रम शुरू करने के प्रयास सुचारू रूप से आगे बढ़ रहे हैं।

यह ध्यान देने योग्य है कि हम ग्रामीण वित्तीय विकास के साथ ग्रामीण आर्थिक विकास के माध्यम से ग्रामीण विकास के लिए हमारे योगदान में सफल रहे हैं। इस संदर्भ में, हमने ग्रामीण प्रबंधन के लिए पाठ्यक्रम विकसित करने पर ध्यान दिया है। ग्रामीण प्रबंधन पर एमबीए पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए हमने कई विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग किया है। हमने बीबीए आरएम के लिए आईसीएफएआई और निजी विश्वविद्यालयों से समर्थन मांगा। अध्यक्ष एआईसीटीई बीबीए आरएम पाठ्यक्रम विकसित करना चाहते थे जिसके लिए एक समिति गठित की गई थी। पाठ्यक्रम को विकसित करने के लिए व्यक्तिगत रुचि और दृढ़ विश्वास लेने के लिए मैं वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार श्री सुब्बा राव का बहुत आभारी हूँ। एमबीए आरएम राज्य और क्षेत्रीय स्तरों को प्रभावित करता है जबकि बीबीए आरएम जिले और उससे नीचे के स्तरों को प्रभावित करता है। किसी भी अन्य कोर्स के विपरीत, इस कोर्स के लिए तीन बुनियादी इंटर्नशिप घटक हैं - एनजीओ के साथ इंटरशिप, ग्रामीण आर्थिक संगठनों के साथ इंटर्नशिप और ग्रामीण शासन और ग्रामीण विकास एजेंसियों के साथ इंटर्नशिप।

हमने एमबीए आरएम के लिए पाठ्यक्रम सामग्री भी विकसित की है जिसमें विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार 335 केस स्टडीज भी शामिल हैं। कवर किए गए कई गांव ऐसे हैं जो ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और 100% ओडीएफ प्राप्त करने के लिए स्वच्छ रैंक के तहत कवर किए गए थे। जब हमने स्वच्छ कैंपस मैनुअल विकसित किया तो हमें यह महसूस नहीं हुआ कि हम अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एमबीए पाठ्यक्रम विकसित करेंगे। 15 संस्थान एआईसीटीई द्वारा अनुमोदित एमबीए प्रोग्राम के साथ एक प्रमुख जा रहे हैं। हम अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र के अवसरों पर उद्योग-शिक्षा मीट का भी आयोजन कर रहे हैं। बीबीए आरएम के लिए जल संसाधन मंत्रालय से सहायता मिल रही है, जल स्वच्छता और स्वच्छता के लिए जिला स्तर पर काम करके ग्रामीण विकास के लिए उत्सुक है और यूनिसेफ से भी जो ग्रामीण स्वच्छता और पर्यावरण को प्रभावित करने वाले पाठ्यक्रम को बढ़ावा देने के लिए उत्सुक है। हम अपने देश की आजादी से ही ग्रामीण विकास के लिए काम कर रहे हैं। इस वर्ष महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती ग्रामीण समुदाय को प्रभावित करने का एक उपयुक्त अवसर था। हम कार्यशालाओं और 5-दिन से लेकर 7-दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रमों
का संचालन करके सभी संस्थानों का समर्थन करेंगे।

गांधीजी की 150 वीं जयंती को नगालैंड से लेकर काश्मीर घाटी से केराला तक के अनुभवात्मक सीखने के कार्यक्रमों का आयोजन करके बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है। एमजीएनसीआरई के कर्मियों द्वारा बड़े पैमाने पर विश्वविद्यालयों / उच्च शिक्षा संस्थानों के साथ बातचीत करके निस्संदेह रूप से कठिन कार्यों के लिए प्रशिक्षण, सेवानिवृत्त होने और सलाह देने वाले युवाओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है। 2 अक्टूबर, जल शक्ति परिसर और जल शक्ति ग्राम और स्वच्छ परिसर नियमावली के अवसर पर भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में माननीय राज्यपालों, माननीय मुख्यमंत्रियों, संबंधित राज्यों के प्रशासनिक प्रमुखों और विश्वविद्यालयों के कुलपतियों द्वारा शुरू किए गए - हमारी यात्रा में एक मील का पत्थर। यह प्रक्षेपण स्वच्छता, स्वच्छता और जल संरक्षण में उच्च शिक्षा संस्थानों की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए एक कदम है जो विकास के लिए राष्ट्रीय प्रमुख आवश्यकताएं हैं।

विश्वविद्यालयों / उच्च शिक्षा संस्थानों में एमजीएनसीआरई द्वारा आयोजित की जा रही उद्योग-अकादमिक मीट सह प्रदर्शनियां सभी ज्ञान बांटने, उद्योग संपर्क, इंटर्नशिप और परियोजनाएं, उत्पाद प्रदर्शन, नए उत्पाद लॉन्च, सामाजिक मनोरंजन के लिए गुंजाइश और निर्णय निर्माताओं, नीति निर्माताओं, प्रमुखों और उद्योग के विशेषज्ञ के बारे में हैं।

वित्त वर्ष 2019-20 और 2020-21 के लिए एमएचआरडी के तत्वावधान में अनुसंधान परिषदों की कार्य योजना पर समीक्षा बैठक में भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (सीएचआर) ने भाग लिया। भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद (आईसीपीआर), भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर), भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान (आईएएस), और महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद (एमजीएनसीआरई), श्री सुब्बा राव ने राष्ट्रीय परिषदों की दृश्यता की आवश्यकता को दोहराया जो बहुत उपयुक्त है। उन्होंने कहा कि "प्रत्येक परिषद को सामाजिक रूप से प्रासंगिक होना चाहिए, राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर काम करना चाहिए। उनकी भूमिका और प्रदर्शन राष्ट्र द्वारा दिखाई और महसूस किया जाना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि सभी परिषदें सहयोग करें, अलग-थलग कामकाज को तोड़ें और आपस में बंधन बनाएं।"

एमजीएनसीआरई ने ग्रामीण सामुदायिक अनुबंध और नई तालीम अनुभवजन्य शिक्षा सहित ग्रामीण लचीलापन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं अपने जीवन भर स्वर्गीय डॉ. टी. करुणाकरन को याद करने और सलाम करने के लिए भी इस क्षण को लेता हूँ, जो जीवन भर एक नई तालीम और अनुभवजन्य शिक्षा सैनिक थे। उनके अथक प्रयास अब फल फूल रहे हैं। नई शिक्षा नीति सामुदायिक जुड़ाव, अनुभवजन्य शिक्षा और ग्रामीण शिक्षा पर केंद्रित है जो हमारे प्रयासों को और अधिक महत्वपूर्ण बनाती है।

जैसे-जैसे वर्ष 2019 करीब आता जा रहा है, यह मुझे संतुष्टि की असीम अनुभूति देता है कि हम विभिन्न परियोजना क्षेत्रों में बहुत सारी जमीन को कवर करने में सक्षम थे। एमजीएनसीआरई की टीम ने देश भर में धमाका करके और हमारे लक्ष्य को प्राप्त करके वास्तव में अच्छा प्रदर्शन किया है।

एक आनंदमय और स्वस्थ नया साल मुबारक हो 2020!

डॉ. डब्ल्यू जी प्रसन्ना कुमार
अध्यक्ष एमजीएनसीआरई

मैं अपने निरंतर समर्थन और समर्पण के लिए हमारे मूल्यवान टीम के सदस्यों और हमारे अकादमिक सहयोगियों का धन्यवाद करता हूँ। कड़ी मेहनत और उत्साह के स्तर अविश्वसनीय हैं। हमारे पास अगले साल कई और परियोजनाएं हैं और हमें यकीन है कि हम समय पर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे। मैं उनके समर्थन के लिए एक और सभी को धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूँ कि यह संबंध जारी रहे और हम एक साथ सफलता हासिल करें।

माननीय उपराष्ट्रपति, श्री एम. वेंकैया नायडू ने "नई तालीम - शिक्षक शिक्षा में अनुभवजन्य शिक्षा" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में एमजीएनसीआरई की शिक्षा पहल पर अपनी व्यापक संतुष्टि व्यक्त की। उन्होंने कहा कि शिक्षा को समाज को लैंगिक रूढ़ियों को दूर करने के लिए सशक्त बनाना चाहिए।
गांधीजी ने जिस ग्रामीण परिवर्तन का सपना देखा था, उस शिक्षा को जोड़ना एक महत्वपूर्ण तत्व था, श्री नायडू ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए एमजीएनएनआरईआरई के कदमों की सराहना की।
नई तालीम सप्ताह आयोजित करने का हमारा आह्वान- स्कूलों में काम पर आधारित सीखने का एक अभियान - गांधीजी की 150 वीं जयंती समारोह के संदर्भ में अच्छी तरह से प्राप्त किया गया था क्योंकि पूर्ववर्ती सप्ताह को नई तालीम सप्ताह के रूप में मनाया गया था और देश में कई स्कूलों और उच्च शिक्षा संस्थानों में राष्ट्रीय नई तालीम दिवस के रूप में 2 अक्टूबर को मनाया गया था। संकाय विकास कार्यक्रम, कार्यशालाएं, ग्रामीण विसर्जन प्रशिक्षण कार्यक्रम, केस स्टडीज के हिस्से के रूप में गाँव का दौरा, संस्थागत गाँव का दौरा (स्वच्छ कार्य योजना के तहत) और

उद्योग-शिक्षा के अवसर पर "अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र में अवसर" जैसे चुनिंदा उच्च शिक्षा संस्थान चल रहे हैं।
एमजीएनसीआरई के ई-लर्निंग सेंटर ने कॉन्फ्रेंसिंग और प्रशिक्षण सुविधाओं के लिए बुनियादी ढाँचा विकसित किया है जिसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम, कौशल निर्माण सत्र और कला स्टूडियो की स्थिति और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग उपकरण, एलसीडी प्रोजेक्टर, सार्वजनिक पता प्रणाली, सफेद बोर्ड, फ्लिप चार्ट, फोटोकॉपी सुविधाओं के साथ कार्यशालाएं शामिल हैं, लैपटॉप, और अन्य आवश्यक उपकरण। हम पूरे देश को जोड़ने वाले वीडियो के लिए इस सुविधा का उपयोग करने और ग्रामीण सामुदायिक सहभागिता और विकास के लिए ऑनलाइन शैक्षिक संसाधनों को साझा करने का इरादा रखते हैं।

ग्रामीण प्रबंधन शिक्षा के क्षेत्र में अकादमिक बिरादरी के महत्वपूर्ण योगदान को अच्छी तरह से पहचाना जाता है। अब एमजीएनसीआरई का मानना है कि यह देश भर के पेशेवरों के लिए बड़े पैमाने पर ग्रामीण प्रबंधन पूल का तालमेल और विस्तार करने का समय है। समावेशी विकास के लिए बाधाओं से ऊपर उठने और ग्रामीण संसाधनों का एक प्रभावी प्रबंधन बनाने की तत्काल आवश्यकता है। स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री के लिए ग्रामीण प्रबंधन पर हमारा पाठ्यक्रम औपचारिक रूप से जारी किया गया था और मैं देश भर में इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए तत्पर हूँ । आज, जैसा कि युवा नौकरी की कमी का सामना कर रहे हैं और प्रौद्योगिकी कई पारंपरिक पारिवारिक नौकरियों को निरर्थक बना रही है, स्वच्छ या स्वच्छता का क्षेत्र कई दरवाजे खोलता है। इसमें पूर्ण, अच्छी तरह से भुगतान करने वाली आजीविका प्रदान करने की क्षमता है और यह एक साफ, रहने योग्य भविष्य का वादा करता है। जो छात्र अध्ययन की इस पंक्ति को चुनते हैं, वे न केवल एक कैरियर के लिए, बल्कि अपने लिए और समाज के लिए एक स्वस्थ जीवन का चुनाव कर रहे हैं।
मैं सभी को शांतिपूर्ण, खुश, स्वस्थ और सफल 2020 की कामना करता हूं!

डॉ. भारत पाठक
उपाध्यक्ष, एमजीएनसीआरई

प्रोफेसर आर के चौहान, अंतरिम कुलपति, शिक्षा अनुसंधान डीम्ड विश्वविद्यालय द्वारा बीबीए और एमबीए ग्रामीण प्रबंधन पाठ्यक्रम का विमोचन

हमारे डेस्क कैलेंडर को 2020 के लिए थनु एसपी वेलुमनी, नगरपालिका प्रशासन, ग्रामीण विकास और कार्यान्वयन, विशेष कार्यक्रम, तमिलनाडु सरकार के कार्यान्वयन द्वारा शुरू किया गया था।

श्री सास्वत मिश्रा आईएएस, कमिश्नर सह सचिव, उच्च शिक्षा, ओडिशा द्वारा कैलेंडर रिलीज़

उद्योग शिक्षावीद भेंट

यूनिवर्सिटी सस्टेनेबल इनोवेशन सेंटर (यूएसआईसी) दयालबाग शैक्षणिक संस्थान द्वारा 20 और 21 दिसंबर को एमजीएनसीआरई के सहयोग से दो दिवसीय उद्योग शिक्षावीद भेंट सह प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। अवधारणा जो संसाधनों के संरक्षण की धारणा को स्पष्ट करती है - शारीरिक और मानसिक दोनों। 25 वक्ता थे जिन्होंने परिपत्र अर्थव्यवस्था से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपनी बात रखी जो सम्मेलन का विषय था। इस सम्मेलन में 98 छात्रों और विभिन्न प्राध्यापक सदस्यों ने भाग लिया। आयोजन में समन्वय करने वाली एमजीएनसीआरई टीम में मेजर शिव किरण और सुश्री दिव्या छाबरा शामिल थीं।

डॉ. राधिका सिंह, एपी, रसायन विभाग, डीईआई ने पूर्व-उपचार प्रबंधन और सामाजिक सेवा कार्य द्वारा पेठा अपशिष्ट चावल के भूसे की चर्चा की। विशाखापट्टनम के स्कूल रेडियो की संस्थापक डॉ. अरुणा गाली ने चर्चा की कि स्कूली रेडियो और विकास धात्री के माध्यम से बच्चे अपनी आवाज़ को बेहतर बनाने के लिए डिजिटल स्कूलों

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) आगरा 20 और 21 दिसंबर

"अपशिष्ट कुछ भी नहीं-एक परिपत्र अर्थव्यवस्था परिप्रेक्ष्य"

में प्रदर्शन करते हैं जिसमें स्कूल किट और ई-बुक्स बनाना शामिल है। प्रो. पूर्णिमा जैन, सामाजिक विज्ञान संकाय और प्रो. सोमी पियारा सत्संगी, सम्मेलन के संयोजक ने सम्मेलन के विषय पर प्रकाश डाला और उसके बाद अध्यक्ष एमजीएनसीआरई के एक रिकॉर्डेड वीडियो संदेश को देखा। उद्घाटन संबोधन मुख्य अतिथि, श्री संदेश श्रीवास्तव, जीएम, भारत के समर्पित फ्रेट कॉरिडोर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (डीएफसीसीआईएल) भारतीय रेलवे द्वारा दिया गया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि 70% रैखिक अर्थव्यवस्था की तुलना में केवल 30% अर्थव्यवस्था ही संचलन का अनुसरण करती है। उन्होंने यह भी कहा कि एक का एक उप-उत्पाद अपशिष्ट प्रबंधन से गुजरने वाले किसी अन्य उत्पाद का एक कच्चा माल हो सकता है।

'स्वच्छता' प्रबंधन और सामाजिक सेवा को दर्शाती एक लघु फिल्म डी.ई.आई. जांच की गई। इसके बाद एमजीएनसीआरई द्वारा डिजाइन किया गया एमबीए पाठ्यक्रम जारी किया गया। अध्यक्षीय टिप्पणी एसपीएचईईएचए के उपाध्यक्ष श्री राजीव नारायण द्वारा की गई। उन्होंने स्थानीय लोगों के बीच जागरूकता विकसित करने और अपशिष्ट प्रबंधन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के महत्व को समझाया। सत्र का समापन प्रोफेसर द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। संजीव स्वामी, सामाजिक विज्ञान संकाय। पहले तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्री जीएस सूद, पूर्व-आईडीएएस, उपाध्यक्ष, एसपीएचईईएएचए और वरिष्ठ उपाध्यक्ष, राधास्वामी सत्संग सभा द्वारा की गई थी। श्री ललित मोहन शर्मा, सीईओ, सहगल समूह ने 'ग्रीन बिल्डिंग एइमिंग सस्टेनेबिलिटी' पर स्काइप के माध्यम से अपनी बात रखी। उन्होंने सौर ऊर्जा, वर्षा जल संचयन और ऊर्जा कुशल प्रणाली के लाभों को बनाए रखने के लिए सर्वोत्तम उपायों के बारे में बात की।

सुश्री सुप्रिया मनोचा ने काम के बारे में चर्चा की, जो वे डीईआई आईसीटी केंद्र, नोएडा में स्कूली छात्रों के साथ कर रहे हैं, जो गुलाब के सार, हर्बल गुलाल और डाई पिगमेंट जैसे उपयोगी उत्पादों में मंदिरों में किए गए पुष्प प्रसाद के रूपांतरण के बारे में हैं। प्रो. जी. सुंदर रेड्डी, बटरफ्लाई एडूफील्ड्स प्राइवेट लिमिटेड ने टिकाऊ संरचनाओं और उद्यमशीलता के अर्थ और महत्व को समझाया। डॉ. रुबीना सक्सेना, कला संकाय, डीईआई ने भारतीय इतिहास में जल (जलजीवनम) के महत्व को समझाया। उन्होंने जल संरक्षण के लिए 'कत्तिंग पनी' के महत्व पर प्रकाश डाला। द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र विभाग के प्रमुख प्रो पूर्णिमा जैन ने की। एनडब्ल्यूएमएस के डॉ. रवि अग्रवाल ने पर्यावरण को बचाने के लिए रीसाइक्लिंग के बारे में सबसे अच्छा विकल्प के रूप में बात की और यह कैसे परिपत्र अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकता है।

उन्होंने विस्तारित निर्माता जिम्मेदारी (ईपीआर) और रीसाइक्लिंग के लिए बाधाओं के बारे में भी बात की। उन्होंने हमारे विश्वविद्यालय के साथ काम करने के लिए अपनी रुचि भी दिखाई। बैलेंसिंग बिट्स के निदेशक श्री राहुल खेरा ने स्थानीय लोगों की कठिनाइयों से निपटने के लिए उपायों और खाद बनाने के लिए तकनीकों पर चर्चा की। उन्होंने कार्बन पदचिह्न के महत्व को भी समझाया। उन्होंने खाद्य अपशिष्ट और खाद बनाने की तकनीक के नए अवसरों का पता लगाने के लिए डीईआई के छात्रों को प्रोत्साहित किया, जो कचरे से धन पैदा करने में मदद कर सकते हैं। डॉ. गुरिंदर सांबी, एन डब्ल्यूएमएस, नई दिल्ली ने कचरे के कार्बनिक अंश के उपचार के बारे में बात की, जो एनारोबिक पाचन के चयापचय पथ के बाद बायोगैस की पीढ़ी की ओर जाता है। डॉ. रूपाली सत्संगी ने भारतीय परिपत्र अर्थव्यवस्था पर अपनी बात रखी।

तीसरे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्री पी.पी. श्रीवास्तव, जेवीपी, राधास्वामी सत्संग सभा। श्री मधुसूदन हनुमप्पा, आईटीसी डब्ल्यूओडब्ल्यू ईएसआरईई फाउंडेशन ने 26 शहरों / राज्यों में उनके संगठन द्वारा चलाए जा रहे डब्ल्यूओडब्ल्यू (वेलबिंग आउट ऑफ वेस्ट) कार्यक्रम पर चर्चा की जिसमें 26 लाख घर और 10 हजार स्कूल शामिल थे। वे लैंडफिल साइटों को खत्म करने और शून्य अपशिष्ट कालोनियों को बनाने के उद्देश्य से 1700 रैगपिकर्स को बेहतर आजीविका प्रदान कर रहे हैं। श्री विनोद कुमार, भारत ऑयल एंड वेस्ट मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड से। लिमिटेड ने 'खतरनाक अपशिष्ट प्रबंधन और उनके निपटान तकनीकों में उपचार भंडारण निपटान सुविधा की महत्वपूर्ण भूमिका' पर अपनी बात रखी। श्री अभिषेक गुप्ता, सीईओ, डब्ल्यूटीवीओआईएस, जयपुर ने सीकर, राजस्थान में चलाए जा रहे आरएफआईडी सिस्टम पर आधारित अपशिष्ट संग्रह विधि पर एक व्यावहारिक और अभिनव प्रस्तुति दी। श्रीमती जी.पी. मेहरा, अध्यक्ष, नगर पंचायत, दयालबाग ने अपने अनुभवों और अपशिष्ट प्रबंधन प्रथाओं पर चर्चा की, जो दयालबाग समुदाय में किए जा रहे हैं। वह डी ईआई अपशिष्ट प्रबंधन छात्रों को इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करता है।

चौथे तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्री बी.एस. गुप्ता, सलाहकार, नवीकरणीय ऊर्जा विभाग, दयालबाग, आगरा। श्री उज्ज्वल, बिजनेस हेड, नमो ई-वेस्ट प्रै.लिमिटेड ने एक इंटरैक्टिव सत्र के साथ ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग के बारे में बात की और एक वीडियो के माध्यम से उनकी कंपनी द्वारा किए जा रहे काम को प्रदर्शित किया। डॉ. हर्ष ठाकुरल, निदेशक, राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद, नई दिल्ली ने प्लास्टिक कचरे, माइक्रो प्लास्टिक प्रकारों और इसके अलगाव, पुनर्चक्रण और पुन: उपयोग की समस्याओं के बारे में चर्चा की। श्री आर.वी. सिंह, सहायक वैज्ञानिक अधिकारी, राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, ने नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में बात की और आगरा में अपशिष्ट प्रबंधन संबंधित विभिन्न गतिविधियों की संक्षिप्त रूपरेखा दी।

के

से

अपशिष्ट जल उपचार के सलाहकार श्री दिनकर शर्मा ने कचरे के वास्तविक अर्थ और परिपत्र अर्थव्यवस्था की अवधारणा पर बात की। प्रो. सीमा भदुरिया, आरबीएस कॉलेज, आगरा ने ग्रामीण उत्थान और रोजगार सृजन के लिए परिपत्र अर्थव्यवस्था पर अपनी बात रखी।

एक समानांतर सत्र भी आयोजित किया गया था, जिसकी अध्यक्षता बटरफ्लाई शिक्षण के क्षेत्रों के माननीय सलाहकार और प्रधान सलाहकार, प्रो. सुंदर रेड्डी ने की थी। डॉ. शोभा भारद्वाज ने 'वाटर रिसाइकिलिंग की वैदिक प्रक्रिया' पर अपनी बात प्रस्तुत की, जिसमें उन्होंने पंचगव्य विधि द्वारा पानी को शुद्ध करने की वैदिक विधियों के बारे में बताया। श्री प्रांजल अग्रवाल और श्री शिवम गौतम, बी.टेक. डीईआई में तृतीय वर्ष के छात्रों ने आकस्मिक कृषि फार्म आग का पता लगाने के लिए उपग्रह आधारित पहचान तकनीकों के बारे में चर्चा की। सुश्री शुभा आनंद, वनस्पति विज्ञान विभाग, डी ईआई और सुश्री प्रीति मेहता, बी। वोक (अमृतसर कैंपस, डीईआई) ने डेरी परिसर में डेरी परिसर में उत्पादित डेयरी अपशिष्टों द्वारा बायोडीजल और ग्लिसरॉल के उत्पादन पर बात की। पिछले सत्र में श्री प्रवीणजीत केपी, प्रबंध निदेशक, एकोपराडिम, बेंगलुरु, ने नासिक में स्थापित ट्रीटमेंट प्लांट के संदर्भ में नगर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन में चुनौतियों पर एक बात की। उसके बाद, 'अपशिष्ट प्रबंधन में कैरियर संभावनाएं' विषय पर एक पैनल चर्चा हुई। पैनल चर्चा की अध्यक्षता श्री जी. सुरेंद्र रेड्डी ने की। अन्य प्रतिभागियों में श्री मधुसूदन हनुमप्पा, श्री विनोद कुमार, सुश्री अरुणा गली, श्री बी.एस. गुप्ता और सुश्री बबीता उपाध्याय। सम्मेलन की सह-संयोजक डॉ. सुमिता श्रीवास्तव ने मुख्य अतिथि मान्यवर सत्र श्री प्रभजोत सोढ़ी, प्रमुख (परिपत्र अर्थव्यवस्था), यूएनडीपी का परिचय दिया।उन्होंने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में चर्चा की और छात्रों को एक संवादात्मक सत्र के माध्यम से इसे एक चुनौतीपूर्ण कैरियर के रूप में लेने के लिए प्रेरित किया।

टीईक्यूआईपी आईआईआई, डीईआई और एमजीएनसीआरई, हैदराबाद द्वारा संयुक्त रूप से प्रायोजित 2 दिवसीय प्रदर्शनी भी आयोजित की गई थी जिसमें तीन अपशिष्ट प्रबंधन सेवा प्रदाता बाहर से और तीन डीईजे बी वॉक थे। कार्यक्रम के छात्रों ने अपने काम का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम ने शिक्षा और उद्योग के एक बड़े पार अनुभाग में नवीन प्रथाओं को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान किया। गैर सरकारी संगठनों, सरकारी संगठनों और उद्योग के प्रतिनिधियों ने डीईआई के प्रबंधन छात्रों को इंटर्नशिप प्रदान करने में अपनी रुचि व्यक्त की।

पीएसजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कोयम्बटूर 18 और 19 दिसंबर

दुनिया की सबसे गहरी खाई मारियाना ट्रेंच में पीईटी बोतलों की खोज से स्थिति की गंभीरता का आकलन किया जा सकता है।

"अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता" पर उद्योग शिक्षावीद भेंट सह प्रदर्शनी पीएसजी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट कोयंबटूर में 18-19 दिसंबर को आयोजित किया गया था। इस आयोजन का उद्घाटन श्री वीरपत्तमन (सेव तिरुपुर), श्री एसएन उमाकांत (आईटीसी डब्ल्यूओडब्ल्यू), श्री नंदकुमार एसजीएम (लीप ग्रीन एनर्जी लिमिटेड) द्वारा किया गया था। जिन गणमान्य व्यक्तियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और कार्यक्रम को सफल बनाया वे थे डॉ. बृंधा, प्रिंसिपल पीएसजी आईएम, डॉ. टी. विजया, डायरेक्टर पीएसजी मैनेजमेंट, प्रो एन विवेक डीन पीएसजी आईएम, डॉ. चित्रा, एडमिनिस्ट्रेशन एंड कम्युनिकेशन, मार्केटिंग, पीएसजी आईएम। आयोजन समिति में डॉ. जे सेक्किझर, श्री कार्तिकेयन, श्री कवीश, सुश्री मैथ्यू सरुविक्कल, श्री रूपप्रसंत, श्री शक्तिराम वडिवेलु, और सुश्री मानसी कक्कड़ भी शामिल थीं। इस कार्यक्रम का समन्वय एमजीएनसीआरई टीम नवीन कुमार और डी समथा द्वारा किया गया था। डॉ विवेक ने एमबीए पाठ्यक्रम और एमजीएनसीआरई की भूमिका का विवरण प्रस्तुत किया। श्री नंद कुमार ने अपशिष्ट प्रबंधन में कई अवसरों पर बात की। उन्होंने सामाजिक उद्यमिता के महत्व पर जोर दिया जो अपशिष्ट प्रबंधन का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनके द्वारा कहा गया एक रोचक तथ्य यह था कि दुनिया की सबसे गहरी खाई मारियाना ट्रेंच में पीईटी बोतलों की खोज से स्थिति की गंभीरता का आकलन किया जा सकता है। श्री एसएन उमाकांत द्वारा अपशिष्ट से मुक्त होने (डब्ल्यूओडब्ल्यू) पर एक बात दी गई थी। उन्होंने एक परिपत्र अर्थव्यवस्था की आवश्यकता पर जोर दिया और अपशिष्ट प्रबंधन में अवसरों पर चर्चा करते हुए कहा कि लगभग 150 उत्पाद हैं जो अपशिष्ट-अपशिष्ट से धन हो सकता है। डॉ. रमन शिवा कुमार, एमएसी द्वारा नगरपालिका अपशिष्ट-ठोस से शून्य पर एक सत्र दिया गया था। डॉ. वीरपत्तन ने समग्र अपशिष्ट प्रबंधन पर बात की। सुश्री संगीता द्वारा सामाजिक उद्यमिता और अपसाइक्लिंग, और श्री धनंजया (टीवीएस) द्वारा ऑटोमोबाइल सेक्टर में औद्योगिक प्रबंधन अपशिष्ट, श्रीमती शशिकला (जेडएफ) द्वारा अपशिष्ट प्रबंधन, यूएलबी श्री रघुपति (हाथ में हाथ) द्वारा उल्फ में नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रेरक भाषण दे रहे थे।

एसआरएम इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (एसआरएम आईएसटी) चेन्नई 4 और 5 दिसंबर

"एक सपना सच हो गया है कि उच्च शिक्षा में अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता में एमबीए जैसे पाठ्यक्रम अब वास्तविकता में आ गए हैं" सेवानिवृत्त मुख्य सचिव, सुश्री शांता शीला नायर, तमिलनाडु

"अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता" पर उद्योग शिक्षावीद भेंट सह प्रदर्शनी का उद्घाटन सेवानिवृत्त मुख्य सचिव, श्रीमती शांता शीला बालकृष्णन नायर, तमिलनाडु द्वारा किया गया था । अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता पर पुस्तकें भी जारी की गईं । इस प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन गणमान्य लोगों ने किया। उन्होंने प्रत्येक स्टाल का दौरा किया और प्रौद्योगिकी और प्रबंधकीय पहलुओं के बारे में बुनियादी जानकारी ली। पहले दिन भारत भर के विभिन्न संस्थानों से अपशिष्ट प्रबंधन गैर सरकारी संगठनों, नगर निगम, छात्रों और संकाय सहित विभिन्न उद्योगों से एकत्र हुए। 4 और 5 दिसंबर को एसआरएम आईएसटी में आयोजित अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता पर उद्योग शिक्षावीद भेंट सह प्रदर्शनी, प्रबंधन के डीन संकाय डॉ. वी. एम. पोनिया द्वारा स्वागत भाषण के साथ शुरू हुआ।

प्रदर्शनी के अवलोकन पर डॉ. कांता देवी अरुणाचलम, डीन सेंटर फॉर एनवायरनमेंटल एंड न्यूक्लियर रिसर्च द्वारा जोर दिया गया और इसके बाद कुलपति प्रो. संदीप संचेती ने राष्ट्रपति का अभिभाषण किया। एमबीए की किताबों का प्रदर्शन दर्शकों ने किया था।

"अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता" पर उद्योग शिक्षावीद भेंट सह प्रदर्शनी का उद्घाटन श्रीमती शांता शीला बालकृष्णन नायर आरडीटी द्वारा किया गया था। मुख्य सचिव, तमिलनाडु। अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता पर पुस्तकें भी जारी की गईं। इस प्रदर्शनी का औपचारिक उद्घाटन गणमान्य लोगों द्वारा किया गया। उन्होंने प्रत्येक स्टाल का दौरा किया और प्रौद्योगिकी और प्रबंधकीय पहलुओं के बारे में बुनियादी जानकारी ली। पहले दिन भारत भर के विभिन्न संस्थानों से अपशिष्ट प्रबंधन गैर सरकारी संगठनों, नगर निगम, छात्रों और शांति सहित विभिन्न उद्योगों से एकत्रित होता है। दिसम्बर 4 से 5 तक आयोजित एसआरएम आईएसटी में अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता पर उद्योग-अकादमिया मीट सह प्रदर्शनी, प्रबंधन के डीन संकाय डॉ. वी. एम. पोनियाह के स्वागत भाषण के साथ शुरू हुई। प्रदर्शनी का अवलोकन, डॉ. कांता देवी अरुणाचलम, डीन सेंटर फॉर एनवायरनमेंटल एंड न्यूक्लियर रिसर्च द्वारा गहराई से जोर दिया गया और इसके बाद कुलपति प्रो संदीप संचेती ने अध्यक्षीय अभिभाषण किया। एमबीए की किताबों का प्रदर्शन दर्शकों ने किया था।

सुश्री शांता शीला नायर ने उद्घाटन भाषण दिया, जहां उन्होंने एक स्वच्छ भारत प्रदान करने के लिए अपशिष्ट प्रबंधन और इसके तकनीकी दृष्टिकोण के महत्व के बारे में बात की, जो एसआरएम स्वच्छ भारत मिशन के लिए एक अतिरिक्त समर्थन है। उन्होंने निगम आयुक्त के रूप में उनके द्वारा लिए गए ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पहलों पर अपना अनुभव भी साझा किया। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि यह उनके जीवनकाल में एक सपना सच हो गया था कि उच्च शिक्षा में एमबीए इन वेस्ट मैनेजमेंट और सोशल एंटरप्रेन्योरशिप जैसे पाठ्यक्रम अब वास्तविकता में आ गए हैं। उन्होंने इस दिशा में एमजीएनसीआरई के प्रयासों की भी सराहना की। उसने इको सेनिटेशन टॉयलेट के इस्तेमाल पर जोर दिया। ईडीएसी इंजीनियरिंग लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री नंद कुमार ने प्रसिद्धि संबोधन दिया। उन्होंने कचरे के अर्थशास्त्र और प्रौद्योगिकी को शामिल किया। श्री नंदा कुमार ने कहा कि "पाठ्यक्रम में लीन पहलुओं को शामिल करना" अच्छा होगा। इसके बाद डॉ. राजन पाटिल, एसोसिएट प्रोफेसर एसपीएच द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

एमबीए अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक उद्यमिता की पुस्तकों का प्रदर्शन दर्शकों के साथ-साथ गणमान्य व्यक्तियों द्वारा - दाईं ओर विजय कार्तिकेयन, प्रबंधन विभाग के संकाय प्रतिनिधि डॉ. थिरुमुरुघन, एसोसिएट डायरेक्टर- (सीएल), एसआरएम आईएसटी, श्री बी शरथ चंद्र नवीन कुमार, सीनियर फैकल्टी, एमजीएनसीआरई, डॉ. वी. एम. पोनैया, डीन, फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट, एसआरएमआईएसटी, डॉ. टीपी गणेशन, प्रो वीसी एसआरएमआईएसटी, गेस्ट ऑफ ऑनर: श्री एम नंद कुमार, एमडी ईडीएसी और संयोजक, फिक्की टीएनएससी - एनर्जी पैनल, डॉ. संदीप डीन प्रबंधन संकाय। प्रदर्शनी का एक अवलोकन संचेती, वीसी एसआरएम आईएसटी, मुख्य अतिथि: सुश्री संता शीला नायर, आईएएस सेवानिवृत्त। मुख्य सचिव, तमिलनाडु, डॉ. एस. गणपति, निदेशक कॉरपोरेट रिलेशंस, डॉ. कांता डी अरुणाचलम, डीन सेंटर फॉर एनवायर्नमेंटल न्यूक्लियर रिसर्च, एसआरएम आईएसटी, डॉ. राजन पाटिल नोडल ऑफिसर स्वछता एक्शन प्लान, एसआरएम आईएसटी।

राज्यों में गतिविधियाँ

ओडिशा

केआईआईटी स्कूल ऑफ रूरल मैनेजमेंट (केएसआरएम) भुवनेश्वर 16 दिसंबर, 24, 2019 को विकास अनुसंधान पर संकाय विकास कार्यक्रम

इस एफडीपी की विशिष्टता यह है कि पाठ्यक्रम के बाद, प्रत्येक प्रतिभागी को ग्रामीण क्षेत्रों में किसी भी विकास के मुद्दे पर एक छोटा शोध करना होगा और 3 महीने के भीतर रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी। विश्वविद्यालयों से 23 संकाय सदस्य - रावेनशॉ विश्वविद्यालय, उत्कल विश्वविद्यालय, केआईआईटी डीम्ड सहित विश्वविद्यालय, केआईएसएस डीम्ड विश्वविद्यालय, केंद्रपारा स्वायत्त कॉलेज समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, ग्रामीण विकास, अनुप्रयुक्त भूगोल, कृषि व्यवसाय सहित आठ अलग-अलग समाज विज्ञान और राजनीतिक विज्ञान विभाग कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिए। प्रो. एस. नंदा, प्रोफेसर एमेरिटस और विश्वविद्यालय के अनुसंधान अध्यक्ष मुख्य अतिथि थे और प्रो एस एन मिश्रा, डीन, केएसओएम इस कार्यक्रम के अतिथि थे। प्रारंभ में प्रो निशीथ परिदा, केएस आर एम के निदेशक का स्वागत किया और प्राध्यापक प्रतिभागियों को केआईआईटी, केआईएसएस और केएसआरएम की परिचय की। एफडीपी के समन्वयक प्रो. दामोदर जेना ने कार्यक्रम प्रस्तुत किया और अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रो वी वेंकटकृष्णन ने किया।

इस कार्यक्रम के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित थे:

- अनुसंधान डिजाइन तैयार करने के लिए प्रतिभागियों को लैस करने के लिए
- विकास के मुद्दे; भागीदारी ग्रामीण मूल्यांकन (पीआरए) सहित विकास अनुसंधान के महत्वपूर्ण चरणों और प्रक्रियाओं पर ज्ञान और कौशल में सुधार करने के लिए;
- प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के विकास अनुसंधान जैसे कि बेसलाइन अध्ययन और प्रभाव मूल्यांकन से परिचित कराना; तथा
- प्रतिभागियों की विश्वसनीयता और अनुसंधान की वैधता, गुणात्मक और मात्रात्मक (सांख्यिकीय उपकरणों का वैज्ञानिक अनुप्रयोग) डेटा विश्लेषण, और रिपोर्टिंग अनुसंधान से लैस करने के लिए।

प्रोफेसर एसएन मिश्रा (केआईआईटी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट), प्रो आर एन सुबुधि (केआईआईटी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट), प्रो. अमरेंद्र दास (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च), प्रो. श्रीलता मलिक (केएसआरएम), सहित अनुभवी ज्ञानसाधन व्यक्ति। रंजन राउत (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट इनोवेशन), और प्रो। दामोदर जेना (केएसआरएम) ने प्रतिभागियों के साथ अपने अनुभवात्मक विकास अनुसंधान कौशल को साझा किया है। इसके अलावा, प्रतिभागियों को अनुसंधान के निम्नलिखित महत्वपूर्ण पहलुओं को करने में सक्षम बनाया गया: ग्रामीण आधारित विकास अनुसंधान समस्याओं की पहचान करना और परिभाषित करना, अनुसंधान डिजाइन तैयार करना, विभिन्न डेटा संग्रह विधियों और उपकरणों को संभालना, नमूनाकरण, आधारभूत अध्ययन, प्रभाव मूल्यांकन, विश्वसनीयता और अनुसंधान में वैधता, डेटा विश्लेषण और रिपोर्टिंग अनुसंधान। यह कार्यक्रम तीन महीने की समयावधि के दौरान प्रत्येक प्रतिभागी द्वारा लघु शोध परियोजना के लिए एक रोड मैप तैयार करने के साथ संपन्न हुआ।

तेलंगाना

प्राध्यापक विकास कार्यक्रम - सीएमआर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी हैदराबाद दिसम्बर, 17 से 21तक

ग्रामीण लचीलापन बनाने हेतु डब्ल्यूएएसएच जागरूकता और स्वयंसेवीवाद

एफडीपी को मुख्य अतिथि डॉ। ए। वी। नारायण, डॉ.लोकेश्वरा राव, डीन अकादमिकों और सुश्री फातिमा मैरी, डीन, संकाय और छात्र मामलों के साथ प्राचार्य ने संबोधित किया। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती सौजन्या द्वारा किया गया था जबकि एमजीएनसीआरई की टीम में डॉ. दिवाकर, बी प्रभाकर और एम साई किरण शामिल थे। कार्यक्रम में सीएमआर ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के तहत विभिन्न इंजीनियरिंग कॉलेजों के 32 प्राध्यापकों ने भाग लिया।

टीमों को समझने, विचार करने और अपनी प्रस्तुतियां तैयार करने के लिए डेढ़ घंटे मिलते हैं

गाँव का दौरा- ग्रामीणों से सीखना पीआरए / पीएलए व्यायाम रावलकोल गाँव, मेडचल मंडल

सुविधाकर्ता को प्रत्येक टीम में जाने की जरूरत है और यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि उन्हें निर्देश सही मिले हैं या नहीं । वे एसएफ डीआरआर, सीसीए, एसडीजी और डब्ल्यूएएसएच के पहलुओं को अपने पाठ्यक्रम और गाइड से जोड़ रहे हैं या नहीं। उनका आउटपुट सार्थक और प्रासंगिक है की नहीं यह भी सुनिश्चित करना है। प्रत्येक टीम को 10 मिनट दिए जाते हैं ताकि वे अपने उत्पादन को पाठ्यक्रम क्षेत्रों के लिंक के साथ प्रस्तुत कर सकें, जहां उनका विषय स्वयं प्रदान करेगा और मूल्य जोड़ देगा। सत्र एसएफडीआरआर, सीसीए, एसडीजी और डब्ल्यूएएसएच के पहलुओं को पाठ्यक्रम में शामिल करने के लिए महत्वपूर्ण पहलुओं के साथ समाप्त हुआ।

13 दिसंबर को यूनिसेफ सहयोग से एनएसएस अधिकारियों सातवाहन विश्वविद्यालय के साथ "डब्ल्यूएएसएच जागरूकता और स्वयंसेवीवाद" पर एक दिवसीय कार्यशाला

आंध्र प्रदेश

एफडीपी - श्री पद्मावती महिला हिंदू कॉलेज ऑफ एजुकेशन, कृष्णा विश्वविद्यालय, मछलीपट्टनम में 29 नवंबर से 3 दिसंबर तक 5 दिवसीय पाठ्यक्रम विकास कार्यक्रम

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रो वाईके सुंदर कृष्ण, कुलपति, कृष्णा विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि समाज के बारे में जानना और उनकी समस्याओं को ग्रामीण समाज को विकसित करने की प्रमुख जिम्मेदारी है, उन्हें और अधिक सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए और साथ ही ग्रामीण भारत से बहुत कुछ सीखना है। श्री के नारायण राव, पूर्व सांसद, सम्मानित अतिथि थे। उन्होंने सामाजिक और आर्थिक पहलुओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग पर बात की। सह-संयोजक डॉ. शैलजा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया । एम. साईकिरण MGNCRE संकाय ने इस कार्यक्रम के उद्देश्य और महत्व को साझा किया। कृष्णा विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. के कृष्णा रेड्डी ने ग्रामीण समुदाय को उच्च शिक्षा संस्थानों के साथ जोड़ने के उद्देश्य पर जोर दिया।

एफडीपी - श्री पद्मावती महिला विश्वविधालय तिरुपति आंध्र प्रदेश बैच III दिसंबर, 04 से 08 तक

ग्रामीण लचीलापन बनाने के लिए 5 दिवसीय पाठ्यक्रम विकास कार्यक्रम

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉ. गोपाल कृष्ण, अध्यक्ष, गांधीवादी अध्ययन तिरुपति द्वारा किया गया, जिन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय प्रणाली को मजबूत करके अफोर्डेबिलिटी और विकेंद्रीकरण के तरीके के बारे में सभा को संबोधित किया। आगे उन्होंने कहा कि विकासशील भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं को बसाया जाना चाहिए। प्रो. के. रामा कृष्णा राव, निदेशक, स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, एसपीएमडब्ल्यू ने अधिक जनसंख्या और कम आय के बारे में कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्य समस्याएँ हैं और ग्रामीण क्षेत्रों में विकास उपलब्ध सुविधाओं का अवलोकन करके और इसे परिवर्तित करके व्यवस्थित किया जा सकता है। कार्यक्रम के संयोजक प्रो.जे. कात्यायनी ने सामाजिक और आर्थिक पहलुओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के बारे में संबोधित किया। 5 वें दिन समापन समारोह के भाग के रूप में मुख्य अतिथि श्री ए. वी. प्रसाद, कुलसचिव, आईआईटी तिरुपति थे। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. जे. कात्यायनी ने प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी के लिए उनकी सराहना की। सह-संयोजक, डॉ. सुनीता और डॉ. अनुराधा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

సహజ వనరులను వినియోగించుకోవాలి

Date : 05/12/2019 EditionName : ANDHRA PRADESH(CHITTOOR, TIRUPATI) PageNo : Page 01

ग्रामीण मग्रता प्रशिक्षण कार्यक्रम 6 से 7 वीं दिसम्बर लिंगायस इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमैंट और टैक्नोलॉजी (एलआईएमएटी) विजयवाड़ा

डॉ. रशीधर, प्रिंसिपल एलआईएमएटी ने इस अवसर के लिए एमजीएनसीआरई को धन्यवाद दिया, जबकि कार्यक्रम समन्वयक के संजीव राव ने प्रतिभागियों को संबोधित किया कि ग्रामीण विकास राष्ट्र के विकास की ओर कैसे ले जाता है। मुख्य अतिथि हिंद कॉलेज के प्राचार्य डॉ। शेषनगन ने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया। आई संध्या, एमजीएनसीआरई के ज्ञानसाधन व्यक्ति ने एमजीएनसीआरई द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया और कार्यक्रम के एजेंडे के बारे में संक्षेप में बताया। प्रतिभागियों ने मदालवरिगुडेम गांव का दौरा किया।

स्वच्छता कार्य योजना और सामुदायिक सहभागिता पर ग्रामीण सामुदायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम

श्री सत्य साईं इंस्टीट्यूट ऑफ हायर लर्निंग (एसएसएसआईएचएल) अनंतपुर 20 दिसंबर, एसएपी इंटरैक्शन और नोडल अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति, डॉ. बी साई गिरिधर, रजिस्ट्रार, डॉ. जी राघवेंद्र राजू, अर्थशास्त्र विभाग के प्रमुख और श्री के वीआरके भार्गव, स्वच्छता कार्य योजना के लिए नोडल अधिकारी के रूप में प्रबंधक।

उत्तर प्रदेश

दो दिवसीय कार्यशाला एसकेजेएम सरकारी पीजी कॉलेज रानीगंज प्रतापगढ़ उ.प्र

दो दिवसीय कार्यशाला का समापन

सुखद 2020

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद

उच्च शिक्षा विभाग

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

Where there is Rural Wellbeing there is Universal Prosperity

5-10-174, शक्कर भवन, ग्राउंड फ्लोर, फ़तेह मैदान रोड, हैदराबाद, तेलंगाना - 500 004.
तेलंगाना राज्य. दूरभाष: 040-23422112, 23212120, फैक्स: 040-23212114 ई-मेल: editor@mgncre.in, वेबसाइट: www.mgncre.org
संपादकीय टीम: डॉ. डब्ल्यूजी प्रसन्ना कुमार, अध्यक्ष एमजीएनसीआरई, डॉ. डी.एन.दास, सहायक निदेशक, अनसूया वी
श्री पी मुरली मनोहर सदस्य-सचिव एमजीएनसीआर द्वारा प्रकाशित